Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095
doi : https://doi.org/10.32628/GISRRJ

गायत्री मंत्र का विद्यालयी स्तर के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

श्याम सुन्दर शर्मा
पीएचडी, शोधार्थी, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर।

डा. विनोद कुमार उपाध्याय
प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
हाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर।

Article Info
Volume 8, Issue 2
Page Number : 80-89

Publication Issue :
March-April-2025

Article History
Accepted : 05 April 2025
Published : 20 April 2025

सार संक्षेप :– गायत्री मन्त्र सद्बुद्धि दायक मन्त्र है। हिन्दू धार्मिक विचारधारा में गायत्री को सबसे अधिक शक्तिशाली मन्त्र माना गया है। उसका अर्थ भी बड़ा दूरगामी और गूढ़ है। यह मन्त्र आत्मा का शोधन करने वाला है। इसके प्रभाव से कठिन दोष व दुर्गुणों का परिमार्जन हो जाता है। जो मनुष्य इसके प्रभाव को भली भाँति जान लेता है। अर्थात उसके सभी कार्य व मनोरथ सि़द्ध हो जाते है ं। ऋषि वाल्मिकी ने भी रामायण की मूल रचना का आधार गायत्री मन्त्र को ही बताया है। श्रीमद्भगवतगीता मे ंकहा है। ''छन्दो में मै ं गायत्री छन्द हूँ। इसलिए ईश्वर उपासना का एक अत्युत्तम सरल और शीघ्र सफल होने वाला मार्ग गायत्री मन्त्र ही है। ऋषि श्रृंग ने कहा हैं समस्त प्राणियों में आत्मा रूप में विद्यमान है, गायत्री मोक्ष का मूल कारण तथा सन्देह रहित मुक्ति का स्थान है। अतः सभी व्यक्तियों का अपने जीवन को सरल और सुगम्य बनाने के लिए इस मन्त्र प्रयोग करना चाहिए जिससे सभी कष्टो से शारीरिक व मानसिक रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है।

मुख्य शब्द :– गायत्री मन्त्र, आध्यात्मिक बुद्धि।

परिचयः– सद्बुद्धि का एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण वैज्ञानिक आधार गायत्री मंत्र है। गायत्री मंत्र अकेला ही इतना सारगर्भित है कि उसे समझने में कई जन्म लग सकते है। इस महामंत्र के एक–एक अक्षर में जो गूढ़ ज्ञान भरा हुआ है। वह इतना उज्जवल है कि उसके प्रकाश में अज्ञान का अन्धकार नष्ट हो जाता है, साथ ही उसके गर्भ में वह सभी तत्व ज्ञान भरा हुआ है। जिसकी व्याख्या के लिए वेद, शास्त्र, पुराण, इतिहास, दर्शन उपनिषद्, ब्राह्मण, आरण्यक, स्मृति, नीति, संहिता एवं मूल ग्रन्थों की रचना की गई है। गायत्री मन्त्र सद्बुद्धि दायक मन्त्र है। सत् तत्व की वृद्धि करना, गायत्री मन्त्र का प्रधान कार्य है और शरीर का कायाकल्प करना एक वैज्ञानिक कार्य है। मानसिक कष्ट में गायत्री साधना से तत्काल शान्ति मिलती है। साधक को एक ऐसा आत्मबल मिलता है कि उसे आंतरिक दृढता एवं आत्म निर्भरता प्राप्त होती है। जिसके द्वारा उसे अपनी कठिनाई तुच्छ दिखाई पडने लगती है और विश्वास हो जाता है कि वर्तमान का जो बुरे से बुरा परिणाम हो सकता है वह भी मेरा कुछ नही सकता। गायत्री मंत्र साधना से अंतःकरण पर पड़े हुए कुसंस्कारों के आवरणों को हटाया जाता है। आत्मा का

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

सहज ईश्वरीय रूप प्रकट हो जाता है। हमारा सुनिश्चित विश्वास है कि मनुष्य के लिए गायत्री मंत्र से बढकर और कोई तत्व ज्ञान एवं जीवन क्रम नहीं हो सकता है। सद्ज्ञान की उपासना का ज्ञान ही गायत्री साधना है। जो इस साधना के साधक है, उन्हें आत्मिक व सांसारिक सुखों की कमी नहीं रहती । ऐसा हमारा सुनिश्चित विश्वास और दीर्घकालीन अनुभव है। गायत्री मंत्र उपासना वस्तुतः ईश्वर उपासना का एक अति उत्तम सरल मार्ग है। इस मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति जीवन के चरम लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति तक पहुँचते है। ब्रह्म और गायत्री में केवल शब्दों का अंतर है। वैसे वे दोनों एक ही है। ब्रह्म ही गायत्री है और उसकी उपासना ब्रह्म प्राप्ति का सर्वोत्तम मार्ग है। गायत्री साधना आत्मबल प्रदान करती है। तथा साधक को सत्संग, प्रेम और भक्ति का आनन्द सहज प्राप्त होता है। सद्ज्ञान का न होना ही दुःख है। सद्ज्ञान की उपासना ही गायत्री साधना है। वेद कहते है ज्ञान को । ज्ञान के चार भेद है – ऋक् युजः साम् और अथर्व । किसी भी जीवित प्राणधारी को लेकर उसकी सूक्ष्म और स्थूल बाहृयी और भीतरी क्रियाओ और कल्पनाओ का गम्भीर एंव वैज्ञानिक विश्लेषण करने पर प्रतीत होगा कि इन्ही चार क्षेत्रों के अन्तर्गत उसकी समस्त चेतना परिभ्रमण कर रही है। ऋक को धर्म,युजः को मोक्ष, साम को काम आः अर्थव को अर्थ भी कहा जाता है। यही चार ब्रह्माजी के मुख है। यह चारो प्रकार के ज्ञान उस चैतन्य शक्ति के ही स्फुरण है। जो सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मजी ने उत्पन्न की थी और जिसे शास्त्रकारो ने गायत्री नाम से सम्बोधित किया है। इस प्रकार चारो वेदो की माता गायत्री हुई। इसी लिए वेद माता गायत्री भी कहा जाता है।

आध्यात्मिक बुद्धिः– सर्वप्रथम आध्यात्मिक बुद्धि को समझने के लिए आध्यात्म शब्द को जानना एवं समझना आवश्यक है। व्याकरण की दृष्टि से देखे तो आत्मानि इस विग्रह के द्वारा अव्ययी भाव समास करके अध्यात्मक शब्द की निष्पत्ति होती है। जिसका अर्थ हुआ आत्मा में स्थिति आत्मन शब्द की सप्तमी विभक्ति के एक वचन में आत्मनि बनता है और अप्रत्यय का इति शब्द अधि शब्द के रूप सामाजिक सूत्र में परिवर्तित होता है। इसका स्पष्ट अर्थ होता है वे आत्मा में स्थिति इस तरह आध्यात्मक शब्द के मूल में ''आत्मन'' शब्द नित्य पुल्लिंग है। जिसका रूप है। ''आत्मा'' आज आत्मा के विकास की आवश्यकता है आत्मा का विकास आध्यात्मिक शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। व्यवहारिक रूप से आध्यात्मिक बुद्धि को आत्मसात् करने वाला व्यक्ति आध्यात्मवादी है। जिसमें आत्मा और ब्रह्म के संबंध तथा स्वरूप का विचार या विवेचन हो। आध्यात्मक शब्द की श्रृंखला में ही आध्यात्मिक शब्द है। यद्यपि इसके साथ दो शब्द और प्रचलित है। आधि दैविक व अदिभौतिक सोप में इन्हें दैहिक दैविक एवं भौतिक भी कहा जाता है। इन तीनों शब्दों में आध्यात्मिक शब्द का विश्लेषण इस प्रकार है– ''आत्ममन् अधिकृत्य भवम् आध्यात्मिकम् अधि उपसर्ग आत्मन शब्द इक प्रत्यय से आध्यात्मिक शब्द बनता है। इसी तरह देव शब्द जोड़कर आधि दैविक और भूत शब्द जोड़कर आधिभौतिक शब्द बनते हैं। आध्यात्मिक बुद्धि, अंतरंग एवं बहिरंग सन्तुलन को बनाये रखते हुये बुद्धिमता एवं भावनापूर्ण कार्य करने की योग्यता है । आध्यात्मिक बुद्धि वह बुद्धि है जो प्रत्येक पक्ष का अर्थ एवं भाव निकालती है। इसी कारण इसे अन्य बुद्धियों की तुलना में उच्चतर माना गया है। आध्यात्मिक बुद्धि व्यक्ति के अहंकार से परे बुद्धिमत्ता का एक उच्च आयाम है जिसकी पहुंच ज्ञान, करुणा, अखंडता, आनंद, प्रेम, रचनात्मकता और शांति के रूप में सच्चे आत्म के परिपक्व गुणों और उन्नत क्षमताओं तक होती है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता अर्थ और उद्देश्य की गहरी समझ को उजागर करती है, और महत्वपूर्ण जीवन कौशल और कार्य कौशल की एक विस्तृत श्रृंखला में सुधार करती हैं। आध्यात्मिक बुद्धि बुद्धि का सर्वोच्च रूप है। यह हमें अपने भीतर के रचयिता के बारे में और अधिक समझने में सक्षम बनाता है। यह हमें अशिक्षित होने से जागरूक होने, एक–आयामी होने से बहु–आयामी होने, अशक्त होने से सशक्त होने की ओर ले जाता है। इस प्रकार आध्यात्मिक बुद्धि सर्वश्रेष्ठ बताया गया हैं।

गायत्री मंत्रः– **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।** युजर्वेद 36.6

गायत्री मंत्र का अर्थ चिन्तन –

ॐ	– ब्रह्म	भूः	– प्राणस्वरूप
भुवः	– दुःखनाशक	स्वः	– सुख स्वरूप
तत्	– उस	सवितुः	– तेजस्वी, प्रकाशवान्
वरेण्यं–	श्रेष्ठ	भर्गो	– पापनाशक
देवस्य–	दिव्य को, देने वाले को	धीमहि	– धारण करें
धियो–	बुद्धि को	यो	– जो
नः	– हमारी	प्रचोदयात्	– प्रेरित करे।

अर्थः– उस प्राण स्वरूप, दुख नाशक, सुख स्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप, परमात्मा को हम अन्तरात्मा में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करें।

शोध समस्या के चयन का औचित्य :– भारतीय संस्कृति एक प्राचीन और प्रथम संस्कृति है जिसमें सर्वाधिक रूप से आध्यात्मिकता पर ही सभी कार्य किये जाते थे। प्राचीन संस्कृति में शिक्षा गुरूकुलों में ही जाती थी और विद्यार्थियों को पूर्ण रूप से संस्कारित कर उनका शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक विकास किया जाता था। परन्तु वर्तमान कालीन शिक्षा पद्धति बिल्कुल ही अलग हैं। हमारी वर्तमान कालीन शिक्षा पद्धति पाश्चात्य संस्कृति का अवलोकन कर रही हैं और सभी विद्यार्थी एक–दूसरे से आगे निकलने की होड़ में लगे है। इस कारण बालकों में आध्यात्मिकता का अभाव और आक्रामकता ने घर बना लिया हैं।

इसलिए शोधार्थी ने अपने विषय का चयन किया है। शोधार्थी का मानना हैं कि आज की शिक्षा से बालकों का मस्तिष्क भारी वेदना से पीड़ित हैं। क्योंकि वर्तमान कालीन शिक्षा से बालकों में चिन्ता अवसाद, कुण्ठा आदि मनोरोग उत्पन्न हो रहे हैं। इसी कारण विद्यार्थी आत्महत्या, स्वदाहः जैसा कदम उठाते हैं।

वर्तमान शिक्षा में विद्यालयी स्तर पर बालकों के पाठ्यक्रम में आध्यात्मिकता का कोई स्थान नहीं केवल बौद्धिक विकास पर ही ध्यान दिया जा रहा हैं। अतः शोधार्थी का मानना है कि छात्रों को विद्यालयी स्तर पर प्रार्थना सत्र में गायत्री मन्त्र का प्रयोग या उच्चारण करवाया जाये तो उन की समस्या कुछ हद तक ठीक की जा सकती हैं। अतः शोधार्थी द्वारा इस शोध बिन्दु का चयन किया गया हैं।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन :– किसी क्षेत्र की समस्याओं तथा तथ्यों से सुपरिचित होने के लिए उस विषय से सम्बन्धित साहित्य को पढ़ना आवश्यक होता है। सम्बन्धित क्षेत्र में समस्याओं तथा तथ्यों के ज्ञान के अभाव में समीक्षक यह नही जाना पाता कि विषय हेतु क्या बाते संगत है और क्या असंगत है।

किसी नए शोध के लिए सम्बंधित साहित्य का अध्ययन लाभदायक सिद्ध होता है। इससे शोधकर्ता का सूझ–बूझ एवं ज्ञान की प्राप्ति होती है। शोधकर्ता को सम्बंधित साहित्य के अध्ययन से सम्बंधित विभिन्न क्षेत्रों में किन–किन व्यक्तियों ने किस–किस विषय पर कार्य किया तथा उनके क्या निष्कर्ष रहें, का ज्ञान होता है। इस प्रकार सम्बंधित साहित्य के अध्ययन से शोधकर्ता को उपकरण, तकनीकी एवं विधियों को विकसित करने तथा अपने अध्ययन में प्रयोग करने का तरीका मालूम हो जाता है।

शोध समस्या कथनः– ''गायत्री मंत्र का विद्यालयी स्तर के बालकों की आक्रामकता , आध्यात्मिक बुद्धि एवं दुश्चिंता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''।

शोध के उद्देश्यः–

1. विद्यालयी स्तर पर बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन।

2. विद्यालयी स्तर पर बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन।
3. विद्यालयी स्तर पर बालकों की आक्रमकता का अध्ययन।
4. विद्यालयी स्तर पर बालिकाओं की आक्रमकता का अध्ययन।
5. विद्यालयी स्तर पर बालकों की दुश्चिंता का अध्ययन।
6. विद्यालयी स्तर पर बालिकाओं की दुश्चिंता का अध्ययन।
7. गायत्री मंत्र के प्रयोग से आक्रामकता, आध्यात्मिक बुद्धि एवं दुश्चिंता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँः– शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैः–

1. गायत्री मंत्र के प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
2. गायत्री मंत्र के प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
3. गायत्री मंत्र के प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् बालिकाओ की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
4. गायत्री मंत्र के प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् शहरी क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
5. गायत्री मंत्र के प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् ग्रामीण क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
6. गायत्री मंत्र के प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् शहरी क्षेत्र के बालिकाओ की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
7. गायत्री मंत्र के प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् ग्रामीण क्षेत्र के बालिकाओ की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

शोध विधि– शोध कार्य में प्रयुक्त होने वाले प्रविधि प्रयोगात्मक विधि है।

शोध न्यादर्श– प्रस्तुत शोध में जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण सरकारी विद्यालय के 200 विद्यार्थियो को न्यादर्श के रूप में लिया जाना हैं।

शोध में प्रयुक्त उपकरण– आध्यात्मिक बुद्धि परीक्षण –प्रो. रोकिया जैनुद्दीन एवं कुमारी अंजुम अहमद, शिक्षा विभाग अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. टी परीक्षण

आकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

परिकल्पना 1– गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका संख्या 1

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत/ अस्वीकृत
गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि	200	247.50	22.16	49.02	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
गायत्री मंत्र का प्रयोग करने के पश्चात् विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि	200	337.20	13.28		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.97 स्वतंत्रता के अंश = 398

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.59

तालिका संख्या 4.1 में गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि के आंकड़ें दिये गये हैं। गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि का मध्यमान 247.50 एवं मानक विचलन 22.16 प्राप्त हुआ तथा गायत्री मंत्र का प्रयोग करने के पश्चात् विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि का मध्यमान 337.20 एवं मानक विचलन 13.28 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 398 पर टी का मान 49.02 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.97 एवं 2.59 से अधिक है। अतः परिकल्पना "गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। परिकल्पना अस्वीकृत होने का कारण यह है कि गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि का विकास होता है। अतः हम कह सकते हैं कि गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

परिकल्पना 2– गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका संख्या 2

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत/ अस्वीकृत
गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि	100	241.66	22.15	37.36	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
गायत्री मंत्र का प्रयोग करने के पश्चात् बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि	100	339.54	14.03		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.97 स्वतंत्रता के अंश = 198

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.60

तालिका संख्या 4.2 में गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि के आंकड़ें दिये गये हैं। गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि का मध्यमान 241. 66 एवं मानक विचलन 22.15 प्राप्त हुआ तथा गायत्री मंत्र का प्रयोग करने के पश्चात् बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि का मध्यमान 339.54 एवं मानक विचलन 14.03 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 198 पर टी का मान 37.36 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.97 एवं 2.60 से अधिक है। अतः परिकल्पना "गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना अस्वीकृत होने का कारण यह है कि गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि का विकास होता है। अतः हम कह सकते हैं कि गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

परिकल्पना 3– गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका संख्या 3

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि	100	253.33	20.68	33.97	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
गायत्री मंत्र का प्रयोग करने के पश्चात् बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि	100	334.85	12.11		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.97 स्वतंत्रता के अंश = 198

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.60

तालिका संख्या 4.3 में गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि के आंकड़ें दिये गये हैं। गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि का मध्यमान 253.33 एवं मानक विचलन 20.68 प्राप्त हुआ तथा गायत्री मंत्र का प्रयोग करने के पश्चात् बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि का मध्यमान 334.85 एवं मानक विचलन 12.11 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 198 पर टी का मान 33.97 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.97 एवं 2.60 से अधिक है। अतः परिकल्पना "गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना अस्वीकृत होने का कारण यह है कि गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि का विकास होता है। अतः हम कह सकते हैं कि गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

परिकल्पना 4– गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् शहरी क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका संख्या 4

समूह (Group)	**संख्या (N)**	**मध्यमान (M)**	**मानक विचलन (S.D.)**	**टी–परीक्षण I (t)**	**स्वीकृत / अस्वीकृत**
गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व शहरी क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि	50	232.16	22.29	27.97	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
गायत्री मंत्र का प्रयोग करने के पश्चात् शहरी क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि	50	337.90	14.77		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.98 स्वतंत्रता के अंश = 98

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.63

तालिका संख्या 4.4 में गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् शहरी क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि के आंकड़ें दिये गये हैं। गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व शहरी क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि का मध्यमान 232.16 एवं मानक विचलन 22.29 प्राप्त हुआ तथा गायत्री मंत्र का प्रयोग करने के पश्चात् शहरी क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि का मध्यमान 337.90 एवं मानक विचलन 14.77 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 98 पर टी का मान 27.97 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.98 एवं 2.63 से अधिक है। अतः परिकल्पना "गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् शहरी क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना अस्वीकृत होने का कारण यह है कि गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से शहरी क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि का विकास होता है। अतः हम कह सकते हैं कि गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से शहरी क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

परिकल्पना 5– गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका संख्या 5

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि	50	248.18	23.98	22.40	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
गायत्री मंत्र का प्रयोग करने के पश्चात् शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि	50	332.84	11.87		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.98 स्वतंत्रता के अंश = 98

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.63

तालिका संख्या 4.5 में गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि के आंकड़ें दिये गये हैं। गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि का मध्यमान 248.18 एवं मानक विचलन 23.98 प्राप्त हुआ तथा गायत्री मंत्र का प्रयोग करने के पश्चात् शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि का मध्यमान 332.84 एवं मानक विचलन 11.87 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 98 पर टी का मान 22.40 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.98 एवं 2.63 से अधिक है। अतः परिकल्पना "गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना अस्वीकृत होने का कारण यह है कि गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि का विकास होता है। अतः हम कह सकते हैं कि गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

परिकल्पना 6– गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् ग्रामीण क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका संख्या 6

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व ग्रामीण क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक	50	251.16	17.61		दोनों स्तर पर

बुद्धि					अस्वीकृत
गायत्री मंत्र का प्रयोग करने के पश्चात् ग्रामीण क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि	50	341.18	13.20		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.98 स्वतंत्रता के अंश = 98

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.63

तालिका संख्या 4.6 में गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् ग्रामीण क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि के आंकड़ें दिये गये हैं। गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व ग्रामीण क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि का मध्यमान 251.16 एवं मानक विचलन 17.61 प्राप्त हुआ तथा गायत्री मंत्र का प्रयोग करने के पश्चात् ग्रामीण क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि का मध्यमान 341.18 एवं मानक विचलन 13.20 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 98 पर टी का मान 28.95 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.98 एवं 2.63 से अधिक है। अतः परिकल्पना "गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् ग्रामीण क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना अस्वीकृत होने का कारण यह है कि गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से ग्रामीण क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि का विकास होता है। अतः हम कह सकते हैं कि गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से ग्रामीण क्षेत्र के बालकों की आध्यात्मिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

परिकल्पना 7– गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका संख्या 7

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–परीक्षण (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि	50	258.48	15.31	28.40	दोनों स्तर पर अस्वीकृत
गायत्री मंत्र का प्रयोग करने के पश्चात् ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि	50	336.86	12.13		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.98 स्वतंत्रता के अंश = 98

0.01 स्तर पर टी का मान = 2.63

तालिका संख्या 4.7 में गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि के आंकड़ें दिये गये हैं। गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व ग्रामीण क्षेत्र की

बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि का मध्यमान 258.48 एवं मानक विचलन 15.31 प्राप्त हुआ तथा गायत्री मंत्र का प्रयोग करने के पश्चात् ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि का मध्यमान 336.86 एवं मानक विचलन 12.13 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 98 पर टी का मान 28.40 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.98 एवं 2.63 से अधिक है। अतः परिकल्पना "गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से पूर्व एवं पश्चात् ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता" दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना अस्वीकृत होने का कारण यह है कि गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि का विकास होता है। अतः हम कह सकते हैं कि गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

निष्कर्ष :– किसी भी शोध अध्ययन के सम्पूर्ण होने पर निष्कर्ष के रूप में शोधकर्ता के सामने कुछ परिणाम निष्कर्ष के रूप में निकलकर आते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में निम्न तथ्य प्राप्त हुये हैं– गायत्री मंत्र एक परिपूर्ण व शक्तिशाली मंत्र हैं जिसके प्रभाव से समस्त संसार प्रकाशमान होता हैं। अद्भूत व वैभवशाली मन्त्र का प्रयोग कर विद्यार्थी पूर्ण सफलता को प्राप्त कर अपना जीवन सफल बना सकता है। विद्यार्थी में विवेक, निर्मलता, संयम आदि सद्गुणों का विकास होता हैं। जो भी विद्यार्थी सम्पूर्ण मनोयोग से इसका प्रयोग अपने जीवन में एकाग्रता बढाने , मानसिक शांति , स्मरण शक्ति वृद्धि करने व दूषित वातावरण को दूर करता है, तथा अपने सभी कार्यो में सफतलता को प्राप्त कर लेता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. श्रीमद्भगवतगीता।
2. छान्दोग्योपनिषद् ।
3. वाल्मीकिरामायण ।
4. युजर्वेद ।
5. नित्य कर्म पूजा प्रकाश गीताप्रेस गोरखपुर ।
6. कूर्म पुराण
7. देवी भागवत
8. शर्मा, सी.एल.''सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण पद्वतियाँ'', राजस्थान हिन्दी ग्रथ अकादमी, जयपुर, संस्करण–2008
9. मंगल आशु ''शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ व शैक्षिक सांख्यिकी, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
10. रतन बारिक (2021) ''आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में शिक्षकों की आत्मसामर्थ्य एवं नियन्त्रण संस्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन''।
11. सिंसोदिया एवं पण्डया (2020) द्वारा ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सृजनात्मक चिंतन एवं आध्यात्मिक बुद्धि के सन्दर्भ में अध्ययन''।
12. आनन्द कुमार (2019) अपने शोध विषय ''आध्यात्मिक बुद्धि का शिक्षक प्रशिक्षकों की जीवन शैली, नैतिक मूल्यों और निर्णय क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन''।
13. कुमावत परमेश्वर (2019) के द्वारा ''युवाओं में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और जीवन संतुष्टि के बीच सम्बन्ध का अध्ययन''